International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation

E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com

Volume 2, Issue 5, September-October 2026

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शारिरिक, मानसिक एवं शैक्षिक विकास में आंगनबाड़ी केन्द्रों की भूमिका

पप्पू[1], डॉ. शुभ्र पी.काण्डपाल[2]

[1]शोधार्थी,एम.बी.पी.जी.स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी

[2]एसोसिएट प्रोफेसर,एम.बी.पी.जी.स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी

प्रस्तावना– प्रारम्भिक बाल्यावस्था मानव जीवन का अत्यन्त संवेदनशील एवं निर्णायक चरण है, जहाँ बच्चे के भविष्य की आधारशिला निर्मित होती है। इस अवधि को न केवल शारीरिक वृद्धि के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना जाता है बल्कि बच्चे के मानसिक एवं संवेगात्मक विकास के दृष्टिकोण से भी यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सिगमंड फ्रायड के अनुसार जीवन के प्रारम्भिक वर्षों (0–6 वर्ष) में अनुभव, पालन–पोषण और वातावरण बच्चों के भावी व्यक्तित्व, मानसिक एवं भावनात्मक विकास की नींव रखते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की नई शैक्षिक संरचना (5+3+3+4) का उद्देश्य बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास के साथ–साथ उन्हें औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करना है। एन. ई. पी. 2020 आँगनवाड़ी केन्द्रों को प्राथमिक विद्यालयों के साथ जोड़कर तथा उसके कार्यकर्त्ताओं को विभिन्न कार्य{म उन्मुखी गतिविधियाँ एवं प्रशिक्षण प्रदान करके खेल अथवा गतिविधि आधारित शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आँगनवाड़ी केन्द्रों के माध्यम से 0–6 आयुवर्ग के बच्चों को उनकी स्वास्थ्य, रक्षा, देखभाल के साथ–साथ उन्हें पूर्व–प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य निर्धारित करती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्वः–भारतीय समाज आर्थिक, सामाजिक व भौगोलिक दृष्टिकोण से विभिन्न वर्गों में विभाजित है। कुलीन व समृद्ध परिवार के माता–पिता अपने बच्चों को पौष्टिक आहार, अनुभव एवं उचित वातावरण प्रदान करने में सक्षम होते हैं किन्तु आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के बच्चों को उनके शारीरिक, मानसिक व शैक्षिक विकास हेतु पर्याप्त सुविधाऐं एवं वातावरण नहीं मिल पाता है परिणामस्वरूप ऐसे बच्चें अपने जीवन में हमेशा के लिए पिछड़ जाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) 0–6 वर्ष के बच्चों के शारीरिक, मानसिक व शैक्षिक विकास हेतु आँगनवाड़ी केन्द्रो को मजबूत आधार प्रदान करती है।

उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल के नैनीताल जनपद जो भौगोलिक दृष्टिकोण से दुर्गम क्षेत्रों में बसा हुआ है यहाँ बड़ी संख्या में ग्रामीण बच्चे हैं जो सामाजिक व आर्थिक रूप से वंचित व कमजोर परिवारों से आते है जिनके लिए आँगनवाड़ी केन्द्र पोषण व शिक्षा का मुख्य स्त्रोत है। अतः इन केन्द्रो की आधारभूत संरचना, संसाधन व विभिन्न समस्याओं, चुनौतियों का अध्ययन करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। शोधकर्ता का ऐसा मानना है कि आँगनवाड़ी की संरचनात्मक सुधार हेतु उक्त शोध अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

संबंधित साहित्य का अध्ययनः–प्रस्तुत शोध में संबंधित साहित्य के अध्ययन में बताया गया है कि सैद्धान्तिक रूप से पूर्व–प्राथमिक शिक्षा को बाल केन्द्रित दृष्टिकोण पर आधारित होना चाहिए। जहाँ बच्चों की रूचियों, प्रवृत्तियों एवं क्षमताओं को ध्यान में रखकर उनके सर्वांगीण विकास हेतु गतिविधियाँ संचालित होनी चाहिए। प्रस्तुत शोध हेतु अध्ययन किये गये साहित्य की संक्षिप्त समीक्षा निम्न प्रकार है–

- शर्मा (2016) उ०प्र० के ग्रामीण क्षेत्रों में आँगनवाड़ी केन्द्रों की प्रभावशीलता पर एक अध्ययन किया गया जो उ०प्र० के ग्रामीण क्षेत्रों में आँगनवाड़ी केन्द्रों की प्रभावशीलता पर केन्द्रित है, खासकर पोषण, स्वास्थ्य और शिक्षा की जागरूकता के सन्दर्भ में यह गर्भवती महिलाओं के लिए समय पर जाँच और टीकाकरण तथा 0–6 वर्ष के बच्चों के शारीरिक, मानसिक विकास कें आँगनवाड़ी केन्द्रों की भूमिका को स्वीकार करता है।

International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation
E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com
Volume 2, Issue 5, September-October 2026

- सेठ (2019) The role of Anganwadi in early Childhood Care and Education इस अध्ययन में एकीकृत बाल विकास सेवा के लाभार्थियों और ड्रापआउट के बीच संज्ञानात्मक एवं भावनात्मक विकास की तुलना की गई जिसमें अपर्याप्त अवसंरचना और स्कूल पूर्व गतिविधियों पर कम ध्यान की ड्रापआउट के कारणों के रूप में पाया गया।
- कुमार एवं घोष (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत प्रारंम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) में चुनौतियाँ और अवसरों पर एक अध्ययन किया गया जिसमें बुनियादी ढ़ाँचे वित्तीय निवेश और शिक्षक प्रशिक्षण की कमी जैसी प्रमुख चुनौतियाँ शामिल हैं।
- कुमार एवं पटेल (2021), ई.सी.सी.ई. सेवा एवं आँगनवाड़ी के सन्दर्भ में माता–पिता का दृष्टिकोण, यह आँगनवाड़ी दर्शाता है कि माता–पिता आँगनवाड़ी केन्द्रों को मुख्य रूप से पोषण केन्द्रों के रूप में देखते हैं, जिससे शैक्षिक गतिविधियों को कम करके आँ का जाता है। यह अध्ययन अभिभावकों की धारणा पर आधारित है।
- सक्सेना (2021), आँगनवाड़ी केन्द्रो में पोषण, शिक्षा कार्यक्रमों की प्रभावशीलता और माता–पिता के व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव का अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि पहले माता–पिता आँगनवाड़ी केन्द्रों को केवल प्रतीकात्मक रूप से देखते थे लेकिन समय के साथ–साथ आँगनवाड़ी केन्द्र बच्चों के विकास में सकारात्मक भूमिका निभा रहे हैं।
- नीति आयोग (2021), Status of ICDS in India, नीति आयोग की इस रिपोर्ट में आँगनवाड़ी केन्द्रों में धन के विलंबित संवितरण और वित्तीय संसाधनों की कमी पर प्रकाश डाला गया है। यह एक सरकारी रिपोर्ट है जो केवल नीतिगत कमियों पर ध्यान केन्द्रित करती है।

समस्या कथनः–राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिपेक्ष्य में पूर्व–प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक एवं शैक्षिक विकास में आँगनवाड़ी केन्द्रों की भूमिका।

अध्ययन के उद्देश्यः–

1. पूर्व–प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शारीरिक विकास में ग्रामीण एवं शहरी आँगनवाड़ी केन्द्रों की भूमिका की तुलना करना।
2. पूर्व–प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के मानसिक विकास में ग्रामीण एवं शहरी आँगनवाड़ी केन्द्रों की भूमिका की तुलना करना।
3. पूर्व–प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में ग्रामीण एवं शहरी आँगनवाड़ी केन्द्रों की भूमिका की तुलना करना।

परिकल्पनाः–

1. पूर्व–प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शारीरिक विकास में ग्रामीण एवं शहरी आँगनवाड़ी केन्द्रों की भूमिका में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. पूर्व–प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के मानसिक विकास में ग्रामीण एवं शहरी आँगनवाड़ी केन्द्रों की भूमिका में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. पूर्व–प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में ग्रामीण एवं शहरी आँगनवाड़ी केन्द्रों की भूमिका में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation
E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com
Volume 2, Issue 5, September-October 2026

विश्लेषण एवं व्याख्याः–

उद्देश्य 1. पूर्व–प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शारीरिक विकास में ग्रामीण एवं शहरी आँगनवाड़ी केन्द्रों की भूमिका का अध्ययन करना।

परिकल्पना 1. पूर्व–प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी आंगनबाड़ी केंद्रों के विद्यार्थियों के शारीरिक विकास में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणीः 1 शारीरिक विकास – ग्रामीण बनाम शहरी तुलना

क्षेत्र	संख्या	औसत स्कोर	मानक विचलन	प्रतिशत	t–मान	p–मान
ग्रामीण (1)	290	82.69	4.58	91.9	1.82	0.069
शहरी (2)	210	81.05	5.12	90.1	&-	(NS)
कुल	500	82.00	4.85	91.1	–.	–.

**. Significant at the 0.01 level (2-tailed). t-vale-2.576
*.Significant at the 0.05 level (2-tailed). t-vale-1.96

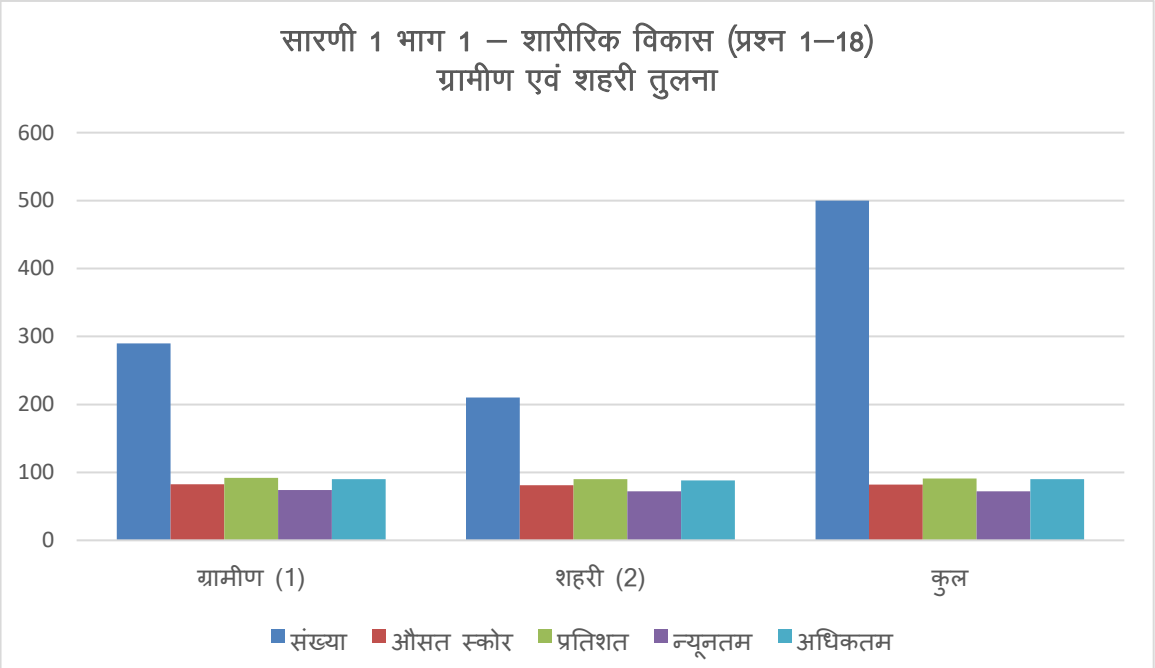

उप–विभागवार विश्लेषण

विकास क्षेत्र	ग्रामीण औसत	शहरी औसत	अेतर	प्रतिशत
स्थूल गामक विकास प्रश्न 1–4	18.2 / 20	17.8 / 20	+0.4	91.0% VS 89.0%
स्थूल गामक विकास प्रश्न 5–9	23.1 / 25	22.5 / 25	+0.6	92.4% VS 90.0%
पोषण स्थिति प्रश्न 10–14	22.8 / 25	22.3 / 25	+0.5	91.2% VS 89.2%
स्वास्थय स्थिति प्रश्न 15–18	18.6 / 20	18.4 / 20	+0.2	93.0% VS 92.0%

International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation
E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com
Volume 2, Issue 5, September-October 2026

व्याख्या एवं विश्लेषण:

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में बच्चों का शारीरिक विकास उत्कृष्ट स्तर (>90%) पर पाया गया है। विशेष रूप से ग्रामीण आँगनवाड़ी केंद्रों में शहरी केंद्रों की तुलना में 1-64 अंकों का थोड़ा अधिक स्कोर दर्ज किया गया, जो यद्यपि p= 0-069 के साथ सांख्यिकीय रूप से सीमांत है, फिर भी ग्रामीण केंद्रों के सकारात्मक प्रयासों की ओर संकेत करता है। सर्वेक्षण में यह भी सामने आया कि स्थूल (Gross) और सूक्ष्म (Fine) गामक विकास के लिए बच्चों को पर्याप्त स्थान एवं विविध गतिविधियाँ उपलब्ध कराई जा रही हैं, जो उनकी शारीरिक क्षमता और समन्वय के विकास में सहायक हैं। इसके अतिरिक्त, पोषण सेवाएँ, जैसे पूरक पोषण (THR) एवं पौष्टिक आहार, दोनों ही क्षेत्रों में संतोषजनक रूप से संचालित की जा रही हैं। स्वास्थ्य सेवाओं के संदर्भ में, टीकाकरण रिकॉर्ड का व्यवस्थित संधारण एक अत्यंत सकारात्मक पहलू के रूप में सामने आया है, जहाँ 93% से अधिक मामलों में अभिलेख सुव्यवस्थित रूप से रखे जा रहे हैं, जो बाल स्वास्थ्य निगरानी और कार्यक्रम की प्रभावशीलता को सुदृढ़ करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में शारीरिक विकास गतिविधियों के लिए अधिक खुला स्थान उपलब्ध होने के कारण मामूली बेहतर प्रदर्शन। दोनों क्षेत्रों में NEP 2020 के शारीरिक विकास पर बल का सकारात्मक प्रभाव। अर्थात् शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जातीहै।

उद्देश्य 2. पूर्व–प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के मानसिक विकास में ग्रामीण एवं शहरी आँगनवाड़ी केन्द्रों की भूमिका का अध्ययन करना।

परिकल्पना 2. पूर्व–प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी आंगनबाड़ी केंद्रों के विद्यार्थियों के मानसिक विकास में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी : 2 मानसिक विकास – ग्रामीण बनाम शहरी तुलना

क्षेत्र	संख्या	औसत स्कोर	मनक विचलन	प्रतिशत	t- मान	p–मान
ग्रामीण)1	290	77.48	5.87	86.1%	1.24	0.215
शहरी)2	210	78.57	3.99	87.3%		(NS)
कुल	500	77.96	5.12	86.6%		-

**. Significant at the 0.01 level (2-tailed) t-vale-2.576
*. Significant at the 0.05 level (2-tailed). t-vale-1.96

International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation
E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com
Volume 2, Issue 5, September-October 2026

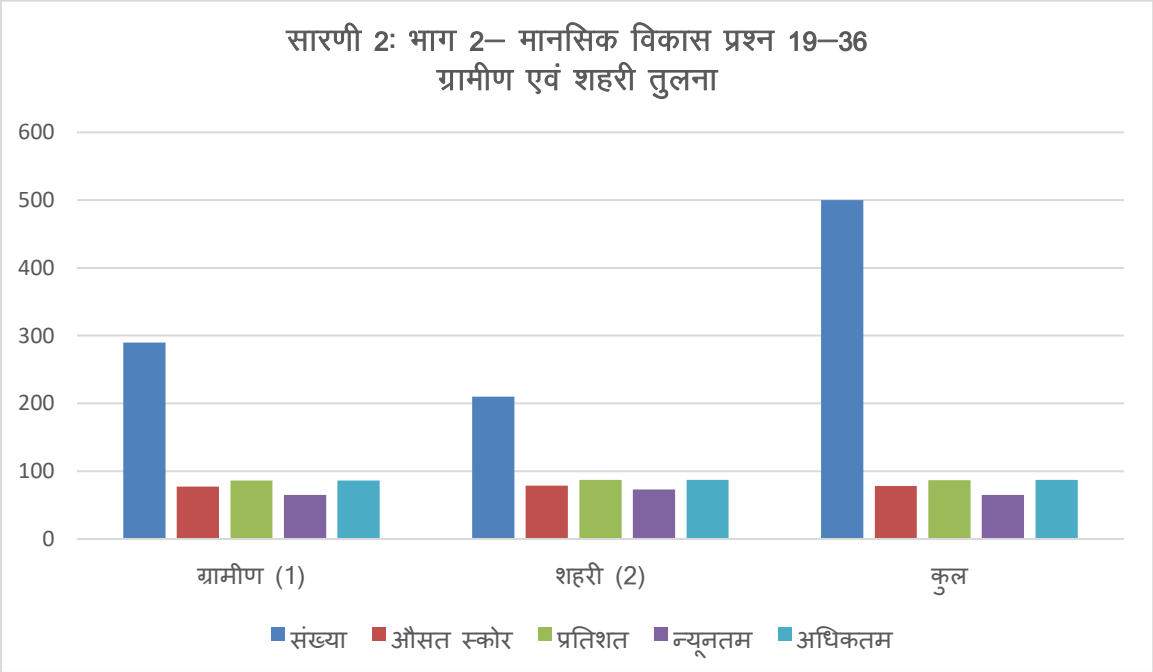

उप– विभागवार विश्लेषण

विकास क्षेत्र	ग्रामीण	शहरी	अंतर	टिप्पणी
संज्ञानात्मक कौशल प्रश्न 19–23	21.4 / 25	21.9 / 25	-0.5	शहरी थोड़ा बेहतर
भाषा विकास प्रश्न 24–28	21.6 / 25	21.8 / 25	-0.2	लगभग समान
स्मृति एवं एकाग्रता प्रश्न 29–32	17.2 / 20	17.5 / 20	-0.3	शहरी में बेहतर
समस्या समाधान प्रश्न 33–36	17.3 / 20	17.4 / 20	-0.1	नगण्य अन्तर

व्याख्या एवं विश्लेषण

आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि शहरी आँगनवाड़ी केंद्रों में बच्चों का मानसिक विकास ग्रामीण केंद्रों की तुलना में औसतन 1.09 अंक अधिक पाया गया, हालांकि यह अंतर $p= 0.215$ के साथ सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। समग्र रूप से देखा जाए तो दोनों ही क्षेत्रों में मानसिक विकास का प्रदर्शन अच्छा (>86%) रहा, जो कार्यक्रम की प्रभावशीलता को दर्शाता है। सर्वेक्षण में यह भी स्पष्ट हुआ कि संज्ञानात्मक कौशल के विकास के लिए दोनों क्षेत्रों में पर्याप्त गतिविधियाँ, जैसे पहेलियाँ और मिलान खेल, नियमित रूप से कराई जा रही हैं। इसी प्रकार भाषा विकास के संदर्भ में कहानी सुनाना और बालगीत बच्चों की अभिव्यक्ति, शब्दावली और समझ विकसित करने में प्रभावी सिद्ध हो रहे हैं। यद्यपि शहरी केंद्रों में शिक्षण सामग्री की उपलब्धता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई, जिसके कारण वहाँ मामूली रूप से बेहतर प्रदर्शन देखने को मिला, फिर भी यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। यह तथ्य इस बात को रेखांकित करता है कि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बच्चों का मानसिक विकास लगभग समान स्तर पर हो रहा है, और बुनियादी शैक्षणिक प्रक्रियाएँ दोनों परिवेशों में प्रभावी ढंग से कार्यान्वित की जा रही हैं। अर्थात शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation
E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com
Volume 2, Issue 5, September-October 2026

- उद्देश्य 3– पूर्व–प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में ग्रामीण एवं शहरी आँगनवाड़ी केन्द्रों की भूमिका का अध्ययन करना।
- परिकल्पना 3– पूर्व–प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी आंगनबाड़ी केंद्रों के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी 3: शैक्षिक विकास – ग्रामीण बनाम शहरी तुलना

क्षेत्र	संख्या	औसत स्कोर	मानक विचलन	प्रतिशत	t- मान	p- मान
ग्रामीण (1)	290	126.52	4.61	87.3%	2.15	0.032
शहरी (2)	210	124.10	8.33	85.6%	-	(S)
कुल	500	125.48	6.52	86.5%	-	-

**. Significant at the 0.01 level (2- tailed). t-vale-2.576

*. Significant at the 0.05 level (2-tailed). t-vale-1.96

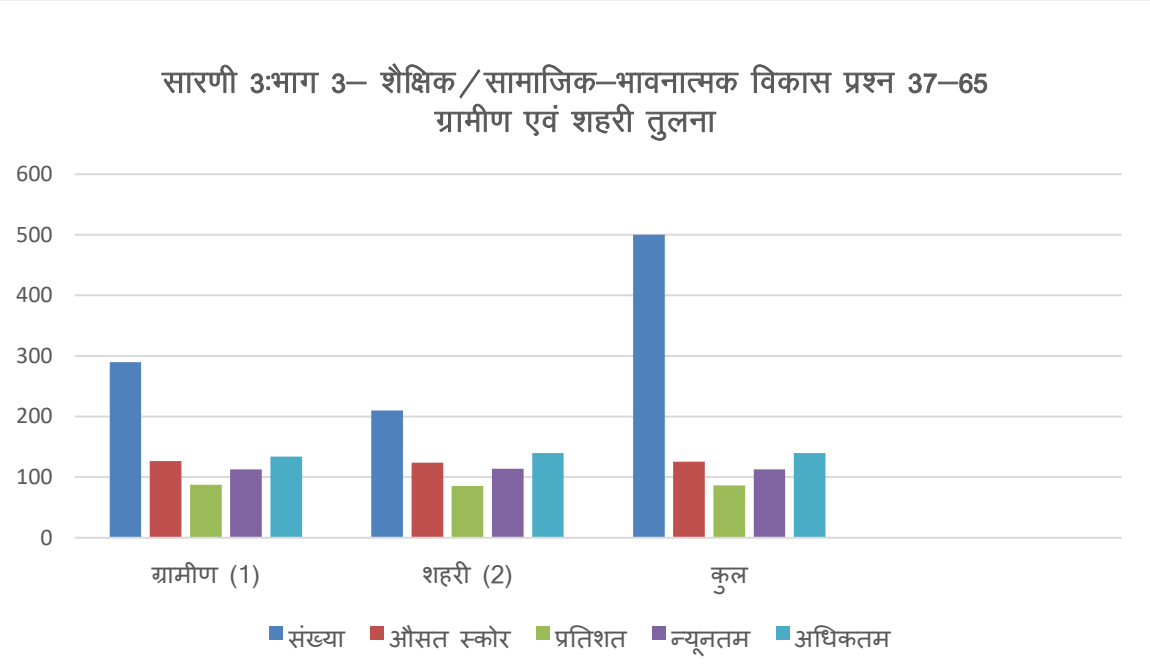

विस्तृत उप–विभाग विश्लेषण:

शैक्षिक क्षेत्र	ग्रामीण	शहरी	अंतर	महत्व
प्री प्रश्न लिटरेसी 37–41	21.8/25	21.3/25	+0.5	ग्रामीण बेहतर
प्री प्रश्न लिटरेसी 42–46	21.9/25	21.5/25	+0.4	ग्रामीण बेहतर
विद्यालय तत्परता प्रश्न 47–51	21.7/25	21.2/25	+0.5	ग्रामीण बेहतर
सामाजिक कौशल प्रश्न 52–55	17.4/20	17.1/20	+0.3	स्मान
भावनात्मक विकास प्रश्न 56–60	21.7/25	21.0/25	+0.7	ग्रामीण बेहतर
व्यक्तित्व विकास प्रश्न 61–65	22.0/25	22.0/25	0.0	समान

International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation
E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com
Volume 2, Issue 5, September-October 2026

व्याख्या एवं विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण आँगनवाड़ी केंद्रों में शहरी केंद्रों की तुलना में सांख्यिकीय रूप से सार्थक बेहतर प्रदर्शन पाया गया है ($p = 0.032$), जहाँ ग्रामीण केंद्रों का औसत स्कोर 2.42 अंक अधिक रहा, जो लगभग 1-7% के अंतर को दर्शाता है। यह परिणाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है क्योंकि यह सामान्य धारणा के विपरीत ग्रामीण केंद्रों की शैक्षणिक प्रभावशीलता को उजागर करता है। सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण केंद्रों में बच्चों के प्री–लिटरेसी और प्री–न्यूमेरेसी कौशल का विकास संतोषजनक रूप से हो रहा है। इसके साथ ही विद्यालय तत्परता, जैसे कक्षा में अनुशासन, निर्देशों का पालन और समूह गतिविधियों में सहभागिता, पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। सामाजिक–भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित करने हेतु सहयोगात्मक खेल, सहभागिता आधारित गतिविधियाँ और व्यवहारात्मक अभ्यास भी नियमित रूप से अपनाए जा रहे हैं। ग्रामीण केंद्रों का यह बेहतर प्रदर्शन आश्चर्यजनक किंतु तार्किक प्रतीत होता है। संभवतः इसका प्रमुख कारण ग्रामीण आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का अधिक औसत अनुभव (8-5 वर्ष बनाम 7-2 वर्ष) तथा छोटे समूहों में बच्चों को व्यक्तिगत ध्यान देने की अधिक क्षमता हो सकता है, जो सीखने की गुणवत्ता और बच्चों के समग्र विकास को सुदृढ़ बनाती है। अर्थात् शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

शैक्षिक निहितार्थः– इस अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं–

- **आँगनवाड़ी केन्द्रों के बुनियादी ढाँचागत सुधार–** इस अध्ययन का उद्देश्य है कि जिन आँगनवाड़ी केन्द्रो में बुनियादी सुविधाओं–भवन, शौचालय, स्वच्छ जल, बिजली आदि का अभाव है वहाँ इन सुविधाओं की आपूर्ति एक तय समय सीमामें की जाए ताकि आँगनवाड़ी केन्द्रों का वातावरण बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक हो सके।
- **शिक्षण सामग्री की आपूर्ति–**प्रत्येक आँगनवाड़ी केन्द्र के लिए न्यूनतम मानक तय किये जाऐं तथा प्रत्येक आँगनवाड़ी केन्द्रों में प्रतिवर्ष शिक्षण सामग्री की आपूर्ति की जाए जिसमें खिलौने, बॉक्स, पजल, किताबें आदि शामिल हों।
- **डिजिटल साक्षरता अभियान–**डिजिटल साक्षरता अभियान के अन्तर्गत आँगनवाड़ी कार्यकत्ताओं को टेबलेट दिये जाए तथा उन्हें विभिन्न डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण प्रदान किये जाऐं।
- **मानकीकृत मूल्यांकन–**डिजिटल मानकीकृत टूल्स द्वारा आँगनवाड़ी केन्द्रों में संचालित होने वाली गतिविधियों की नियमित निगरानी एवं मूल्यांकन किया जाऐ।
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का सम्पूर्ण कार्यान्वयन–**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सभी आँगनवाड़ी कार्यकर्त्ताओं के लिए उचित प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
- **शिशु विकास ट्रैकिंग प्रणाली–** प्रत्येक बच्चे के सर्वांगीण विकास हेतु डिजिटल मील आधारित ट्रैकिंग प्रणाली विकसित की जाए। इसके अन्तर्गत हर बच्चे का व्यक्तिगत रिकार्ड तैयार किया जाऐ।

सन्दर्भ सूची

- शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
- राठौर और रतनू (2021) आँगनवाड़ी कार्यकर्त्ताओं की भूमिका, उत्तरदायित्व एवं महत्वता।
- त्रिपाठी (2022) उत्तर प्रदेश में आँगनवाड़ी केन्द्रों की अवसंरचनात्मक चुनौतियाँ।
- खन्ना एवं गर्ग (2022), आँगनवाड़ी केन्द्रों में शिशु देखभाल सेवाऐं।
- चौधरी एवं गुप्ता (2023), माता–पिता की भागीदारी एवं बाल विकास आँगनवाड़ी के सन्दर्भ में।
- वर्मा (2023) खेल आधारित शिक्षण एवं बाल विकास।

International Journal of Advanced Multidisciplinary Research and Innovation

E-ISSN: 3107-6157 editor@ijamri.com

Volume 2, Issue 5, September-October 2026

- विकीपीडिया (2023), पूर्व–प्राथमिक शिक्षा।
- चतुर्वेदी एवं मिश्रा (2024), NEP 2020 के अनुरूप आँगनवाड़ी पाठयचर्या का विकास।
- मिश्रा एवं तिवारी (2024), पर्वतीय क्षेत्रों में आँगनवाड़ी सेवाओं की पहुँच।
- त्रिवेदी एवं पाण्डे (2024), NEP 2020 और बाल–केन्द्रित शिक्षा शास्त्र।
- शुक्ला (2024), NEP 2020 और प्री–प्राइमरी शिक्षक प्रशिक्षण।